महिला सशक्तिकरण में
हिन्दी साहित्य का योगदान

सम्पादक

डॉ. माया सगरे-लक्का

सह-सम्पादक

डॉ. श्रीनिवास मूर्ति

डॉ. नंदिनी चौबे

डॉ. श्रीनिवास मूर्ति

शिक्षा :

एम.ए., पी-एच. डी. (बेंगलुरु विश्वविद्यालय)

अनुभव :

स्नातक कक्षा का 22 वर्ष

प्रकाशन :

श्री लक्ष्मीकान्त वर्मा के कथा साहित्य में जनवादी चेतना, ऊहला ओडिलो (तेलुगु) और कविता [illegible]लु (तेलुगु)

शोध मार्गदर्शन :

4 पी-एच. डी. उपाधि प्राप्त शोधार्थी

सम्प्रति :

सह आचार्य, कला, मानविकी एवं सामाजिक विज्ञान विभाग, रेवा विश्वविद्यालय, बेंगलुरु

ISBN : 978-93-95922-18-0

₹ 800.00

महिला सशक्तिकरण में हिन्दी साहित्य का योगदान

सम्पादक
डॉ. माया सगरे- लक्का
सह-सम्पादक
डॉ. श्रीनिवास मूर्ति
डॉ. नंदिनी चौबे

विकास प्रकाशन, कानपुर

मूल्य : आठ सौ रुपये मात्र

पुस्तक	:	महिला सशक्तिकरण में हिन्दी साहित्य का योगदान
सम्पादक	:	डॉ. माया सगरे- लक्का
प्रकाशक	:	**विकास प्रकाशन** 311 सी., विश्व बैंक, बर्रा, कानपुर- 208027
संस्करण	:	प्रथम, 2023 ई.
आवरण-सज्जा	:	छपाई घर, ब्रह्मनगर, कानपुर
शब्द-सज्जा	:	शुभी कम्प्यूटर, कानपुर
मुद्रक	:	छपाईघर, ब्रह्मनगर, कानपुर
मूल्य	:	800/-
ISBN	:	978-93-95922-18-0

डॉ. मंगल ससाणे

38. 'शिकंजे का दर्द' आत्मकथा में घरेलू हिंसा और महिला संघर्ष 233–238

बाल कृष्ण शुक्ल

39. निर्मला पुतुल की कविताओं में नारी चेतना 239–244

डॉ. नरेश कुमार

40. लोकगीतों में महिला स्वर (विशेष संदर्भ : हिमाचल प्रदेश) 245–254

प्रीति

41. वर्तमान युगीन दाम्पत्य जीवन 255–258

डॉ. अनुराधा पाकलपाटि

42. नारी सशक्तिकरण की दिशा में मीडिया की भूमिका 259–264

डॉ. सुप्रिया सिंह

लेखक परिचय 265–268

41

वर्तमान युगीन दाम्पत्य जीवन

डॉ. अनुराधा पाकलपाटि

समाज में सदियों से 'विवाह' पारिवारिक रूप धरण के लिए हमेशा एक महत्वपूर्ण स्तम्भ बनकर रहा है। विभिन्न संस्कृतियों के विचारधारा के अनुसार, विवाह एक संस्थान के रूप में विशिष्ट दृष्टिकोण से देखा गया है। हालाँकि, हर संस्कृति में विवाह को सर्वोच्च स्थान देकर उसे सही ठहराया गया है। डॉ. राजेन्द्रकमार शर्मा ने पति-पत्नी के संबंधों का वर्णन करते हुए लिखा है कि "पति-पत्नी के संबंध परिवार के प्राण होते हैं। 'विवाह' इन संबंधों की पहली शर्त है।"[1] अगर इस नजर से देखा जाए तो पति और पत्नी परिवार की मूल आधार स्तंभ माना जाता है।

विवाह के पश्चात स्त्री-पुरुष पति-पत्नी के रूप में जिस जीवन को साथ रहकर गुजरते हैं उसे दाम्पत्य जीवन कहते हैं। वैदिक शब्द के अनुसार- "'दाम्पत्य' शब्द का अर्थ 'घर का संयुक्त अधिकारी अथवा प्रभु या स्वामी एवं स्वामिनी' अर्थात् दम्पति भी कहा जाता है।"[2] दाम्पत्य जीवन अर्थात् वैवाहिक जीवन, स्त्री-पुरुष के जीवन का सबसे अटूट एवं पवित्र बंधन है। यही नहीं यह जीवन एक धर्म है, विश्वास, प्रेम एवं समर्पण है। दाम्पत्य जीवन को प्रमुख विद्वानों ने निम्नलिखित रूप में परिभाषित किया है।

1. डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल के अनुसार, "जीवन एक रथ है जिसमें स्त्री-पुरुष दो पहिए हैं, नौर उसकी धुरी .. पारस्परिक विश्वास है।"[3]
2. डॉ. रांगेय राघव एवं गोविंद शर्मा के अनुसार, "मेरे सामने तो स्त्री-पुरुष के संबंधों का वह रूप आदर्श बनकर आता है, जब दोनों ही जीवन के प्रति जागरूक होकर परिवार को इस तरह चलाएँ जैसे दो बैल गाड़ी को चलते हैं।"[4]
3. गाँधी संस्मरण में "स्त्री-पुरुष का दर्जा समान है। एक ही नहीं दोनों की जोड़ी अपूर्व है, दोनों एक-दूसरे के पूरक हैं और एक-दूसरे के यहाँ तक सहायक हैं कि एक के अभाव में दूसरे का अस्तित्व संभव ही नहीं। किन्तु यदि पुरुष अथवा स्त्री स्थान भ्रष्ट हो जाएँ तो दोनों ही नष्ट हो जाएँगे।"[5]

दाम्पत्य जीवन में पारिवारिक जिम्मेदारी बहुमूल्य है। जो पति-पत्नी दोनों को समान पात्र बनकर उसे निभाना अनिवार्य है। गाड़ी के दो पहिये के समान पति-पत्नी दोनों को अपना कर्तव्य निभाना अनिवार्य है। दाम्पत्य जीवन में अगर पति-पत्नी में से कोई भी स्वार्थी, कठोर, उग्र स्वभाव वाला हो तो उनके दाम्पत्य जीवन में विवाद उत्पन्न होना स्वाभाविक है। एक-दूसरे के प्रतीक राग-द्वेष, मान घुटाव एवं शंका के कारण पति-पत्नी के संबंधों को बिगाड़ देता है।

वर्तमान समय में दाम्पत्य जीवन चुनौती भरी है। इसे सफल बनाने के लिए दोनों पति-पत्नी को एक-दूसरे के लिए समय देना, चुनौती भरी समस्याओं से लड़ने के लिए एक-दूसरे से विचार-परामर्श करने बहुत ही जरूरी है। इसके साथ-साथ यौन सम्बंधों पर भी सुखी दंपती जीवन निर्भर है। पति-पत्नी के बीच शारीरिक सुख उतना ही जरूरी है जिससे दोनों के जीवन में उत्साह और उत्तेजना लाती है। आज समाज में संयुक्त परिवार की जगह छोटे-छोटे परिवारों का रूप धारण बहुत ही तेजी से प्रबल चुकी हैं। पति-पत्नी को अच्छा-बुरा का ज्ञात करने वाले परिवार के बुजुर्ग गाँवों में ही रह जाते हैं। सुखी दाम्पत्य जीवन के लिए शारीरिक आकर्षण ही नहीं मानसिक आकर्षण दोनों के बीच होना अनिवार्य है। राग-द्वेष छोड़कर आपस में समझौता करते हुए, दोनों को कदम मिलाकर चलना अकलमंदी है।

दाम्पत्य जीवन में परिवार का दायित्व की पूर्ति, पति-पत्नी दोनों समान रूप से निर्वाह करना जरूरी है। पुराने जमाने में पति का कर्तव्य सिर्फ परिवार के जरूरतों को पूर्ति करना और पत्नी का धर्म है अपने बच्चों का लालन-पालन और पति का आज्ञा का पालन करना। आज समाज में स्त्री का पात्र समय के साथ बदल चुका है। स्त्री शिक्षा में, परिवार की जिम्मेदारियों को पूरी करने में पुरुष के साथ कदम मिला कर चल रही है। उसे समान दर्ज दिया जा रहा है। परिवार के निर्वाह के लिए उसे भी बाहर जाकर काम करना जरूरी है।

आज गाँव नगरों में परिवर्तित हो रहे हैं, नगर महानगरों में बदल चुके हैं। महानगरीय जीवन, दाम्पत्य जीवन पर अपना असर दिखा रहा है। महानगरों में निवास बनाने वाले परिवारों में पति-पत्नी, माँ-बाप, भाई-बहन, मित्र-पड़ोसी के संबंधों की परिभाषा बदल चुकी है। महँगाई के कारण पति-पत्नी दोनों को परिवार का पालन-पोषण के लिए धन अर्जन करना अनिवार्य बन चुका है। दोनों को काम करना जरूरी है। जिसके कारण पति-पत्नी एक-दूसरे के लिए वक्त देना न के बराबर हो चुका है। इसका कारण काम का बोझ एवं थकान। नगरों में आबादी तेजी से बढ़ती जा रही है, अपने दफ्तरों के आस-पास किराए पर मकान मिलना कठिन है, इसी कारण लोग अपना निवास स्थल शहर से दूर चुनते हैं। जिसके कारण समय का अभाव और सफर का थकान

दाम्पत्य जीवन पर असर दिखा रहा है। यही नहीं अपना करियर बचाने के लिए दफ्तर में सह-साथियों से रेस लगाते हुए अपना पति या पत्नी के लिए समय नहीं दे पाते हैं। यदि पत्नी अधिक शिक्षित है, ऊँची पद पर नौकरी कर रही है, उसका समाज में मन और दर्ज अधिक है तो ईर्ष्या, राग-द्वेष एवं शंका के कारण पति-पत्नी के संबंधों को बिगाड़ देता है। फलस्वरूप दोनों में अनबन्ध, मनघुटाव, दूरियाँ जैसी परिस्थितियों को स्वयं आवाहन दे रहे हैं। इसके साथ-साथ दूसरे व्यक्तियों के साथ अनैतिक संबंध अथवा विवाह के पूर्व प्यार के रिश्ते, दाम्पत्य जीवन में दूसरों की दखलबाजी, सामाजिक समस्याएँ दाम्पत्य जीवन पर प्रभाव दिखा रहा है।

वर्तमान समय में स्त्री को दोनों जिम्मेदारियाँ निभाना चुनौती भरा काम है। एक तरफ करियर दूसरी तरफ परिवार की जिम्मेदारी। दोनों में ताल-मेल बनाए रखना जरूरी है। ऐसे में उसका संघर्ष सराहनीय है। दाम्पत्य जीवन में पारिवारिक जिम्मेदारी बहु मूल्य है। जो पति-पत्नी दोनों को समान दायित्व से उसे निभाना अनिवार्य है। इन सभी कारणों से दम्पत्ति पर मानसिक तनाव बढ़ता जा रहा है, जो तलाक की तरफ राह दिखा रहा है। इसके साथ-साथ पश्चात्य संस्कृति का असर भी और विघ्न बनाते जा रहे हैं।

हर एक व्यक्ति के जीवन में अच्छा हो या बुरा, उसके व्यक्तित्व निर्माण के लिए पारिवारिक संबंध अहम भूमिका निभाते हैं। दाम्पत्य जीवन की गुणवत्ता पर सामाजिक समर्थन (जैसे प्यार बाँटना, ध्यान रखना और सलाह लेना एवं देना) यह सभी मानसिक, व्यवहारिक और शारीरिक पगडंडी पर असर दिखाता है। अलग हुए दम्पत्ति का जीवन की तुलना अगर सुखी दाम्पत्य जीवन बिताने वालों से करें तो हमेशा एक अच्छा मानसिक स्वास्थ्य, शारीरिक स्वास्थ्य के साथ लंबा जीवन जीते हैं।

वर्तमान समय में जिस दम्पत्ति को वारिसों का अवकाश न होने पर भी वे बहुत ही स्नेह से साझेदारी करते हुए अपना जीवन को सार्थक बनाते हैं। उसी प्रकार सकारात्मक वार्तालाप, खुली बातचीत करना और ईमानदार दाम्पत्य जीवन में आवश्यक है जो आज बहुत ही कम दिखता है। मानवीय व्यवहार, प्राकृतिक रूप से यौन संबंध और शृंगार दोनों ही दाम्पत्य जीवन में मुख्य भूमिका निभाते हैं। प्यार होना आसान है जब कि प्यार निभाना कठिन है। आज दाम्पत्य जीवन में धन एक नाजुक कारण बन चुका है। यह एक जटिल समस्या है, इसके अंतर्गत अनेक व्यवहार जैसे अहं एवं अपने-अपने नजरिया के साथ-साथ भावनाएँ भी मौजूद हैं। आर्थिक व्यवहार, बचत हो या खर्चा अपने व्यक्तिगत पूर्व अनुभव और पैतृक आचार-व्यवहारों पर निर्भर होता है। दम्पत्ति को मौलिक आवश्यकताएँ और शान-शौकत के बीच का अंतराल का फरक होना जरूरी है। अपने गृहस्थी की आर्थिक स्थिति पर व्यक्तिगत रूप से ज्ञान होना जैसे बचत के लिए योजनाएँ, फैसला लेना और सतर्क रहना यह सभी विषय सुखी दाम्पत्य जीवन

के लिए जरूरी है। यह सब पति-पत्नी दोनों को साथ मिलकर करने वाले कार्य है। यह भी आदर्श दाम्पत्य जीवन के लक्षण होते हैं। क्या आज यह सब आधुनिक दौर में संभव है?

आज हमारे पारंपरिक रीति-रिवाजों के विरुद्ध सम-लिंगी विवाह बहुत देखने को मिल रहे हैं। दाम्पत्य जीवन का अर्थ एवं परिभाषा बदल रही है। आज के युवा पीढ़ी बिना विवाह किए लीव्ह-इन रिलेशनशिप को अधिक महत्व दिए जा रहे हैं। उनके परिवारों पर इसका प्रभाव कैसे रहेगा यह एक प्रश्न चिन्ह है। क्या लीव्ह-इन रिलेशनशिप को भी दाम्पत्य जीवन कहा जा सकता है। लीव्ह-इन रिलेशनशिप में जन्में बच्चों की क्या मानसिक स्थिति होगी! भविष्य में ऐसे सम्बंधों को समाज स्वीकारेगी! पाश्चात्य देशों से हमें स्वीकारने के लिए अन्य कोई विषय बचा नहीं है! क्या स्त्री को आत्मनिर्भर होना दाम्पत्य जीवन में विघटन बन रही है।

निष्कर्ष में यह कहा जा सकता है दाम्पत्य जीवन, परिवार का आधार है। जैसे सृष्टि के लिए स्त्री-पुरुष आधार है। हमेशा की तरह, दाम्पत्य जीवन का आधार प्रेम, विश्वास, त्याग, समर्पण, सहनशीलता, एक-दूसरे के लिए सम्मान एवं निष्ठा। दम्पत्ति में आपसी मेल-जोल नहीं है तो भी हमारी विवाह व्यवस्था इतनी दृढ़ थी कि अपने बच्चों के लिए पति-पत्नी साथ बिताते थे। वर्तमान समय में परिस्थितियाँ बदल चुकी हैं। पति-पत्नी अपने दाम्पत्य जीवन में खुश नहीं हैं तो साथ रहने की आवश्यकता नहीं समझते हैं। दोनों आपसी समझौता से अलग हो जाते हैं। आज हमारे समाज ने इस विषय को स्वीकार लिया है।

अतः वर्तमान युगीन दाम्पत्य जीवन तेजी से बदल रहा है। इस पर पाश्चात्य जीवन, सिनेमा, टेलीविज़न के धारावाहिक, अंतर्जाल एवं टेक्नॉलजी का प्रभाव भी प्रबल रहा है।

संदर्भ -

1. डॉ. राजेन्द्र शर्मा,
2. वैदिक कोश, सूर्यकांत पृ. 259
3. नाटक तोता मैना, डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल पृ. 68
4. संस्कृति और समाजशास्त्र, भाग-2, डॉ. रांगेय राघव एव, गोविंद शर्मा, पृ. 188
5. गाँधी संस्मरण और विचार, सं. काकासाहब कालेलकर, पृ. 355

★